ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 261-263
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

ग्रामीण विकास में कृषि की भूमिका

डॉ0 अखिलेश कुमार

ऐसोसिऐट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष– अर्थशास्त्र विभाग, के.जी.के. कॉलेज मुरादाबाद (उ0प्र0) भारत

Received- 07.05.2019, Revised- 12.05.2019, Accepted - 17.05.2019 E-mail: -aaryvart2013@gmail.com

सारांश : ***भारत एक कृषि प्रधान देश है। ग्रामीण विकास में कृषि क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका है। आधुनिक युग में आर्थिक विकास का महत्व बढ़ता ही जा रहा है, चाहें वह ग्रामीण क्षेत्र हो अथवा शहरी क्षेत्र। विकास मानव की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। आज जबकि मानव सभ्यता विभिन्न प्रकार की विशम परिस्थितियों से गुजर रही हो तब विकास की गतिविधियों का महत्व और भी बढ़ जाता है। आज भी भारत की अधिकांश जनसंख्या लगभग 70 प्रतिशत कृषि एवं कृषि से सम्बन्धित विभिन्न क्रियाओं पर निर्भर है।***

कुंजीभूत शब्द– कृषि प्रधान, ग्रामीण विकास, भूमिका, आधुनिक युग, आर्थिक विकास, ग्रामीण क्षेत्र ।

कृषि की व्युत्पत्ति कृश धातु + इक् प्रत्यय से है। कृष का अर्थ कर्षण या खींचने से है। इक् प्रत्यय से इसका अर्थ उस विशिष्ट प्रक्रिया से होता है जिसमें कर्षण या हल चलाना अथवा खेती करना सम्मिलित है। कृषि के अंग्रेजी समानार्थी 'Agriculture' शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के दो शब्द ,xj (Ager, Agrifiels or Soil तथा कल्चर (Culture – The care of Trilling) से है। इस प्रकार फसलोंत्पादन कृशि का प्रमुख कार्य है अर्थात भूमि को जोतकर फसल पैदा करना ही कृषि है। इस अर्थ में कृषि का सीमित स्वरूप ही स्पश्ट होता है। बुकानन (1959) ने कृषि शब्द को मिश्र–शब्द पोर्टमाण्ट्यू कहा है। उनके अनुसार कृषि के अन्तर्गत मानव उपयोग के लिये खाद्य पदार्थ या कच्चा माल उत्पन्न करने के लिए मृदा के उपयोग की अत्यन्त साधारण प्रक्रिया से लेकर अत्यन्त संश्लिश्ट प्रविधियाँ सम्मिलित है।

आर्थिक क्रियाओं एवं वातावरण के अर्न्तसम्बन्धों के कारण विशिष्ट अर्थों में कृषि हेतु भू आर्थिक शब्दावली का भी प्रयोग किया गया है। कृषि प्राथमिक आर्थिक क्रियाओं के अर्न्तगत आती है। अतः कृषि एवं वातावरण से सम्बन्धित इस विषय के लिये भू–कृषि शास्त्र शब्दावली का उपयोग अधिक उपयुक्त होगा। आधुनिक उदारवादी, भूमंडलीकरण के युग में कृषि शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में किया जाने लगा है। भारत जैसे विकासशील देश में तो कृशि का महत्व अपने आप में ही महत्वपूर्ण है।

वर्तमान समय में भी कृशि शब्द की संकल्पना में भूमि से फसल उत्पन्न करने के साथ ही पशुपालन, सिंचाई आदि क्रियाओं को भी सम्मिलित किया जाने लगा है। मैकार्टी (1966) ने सोद्देष्य फसलोंत्पादन एवं पशुपालन को कृषि कहा है। इससे स्पष्ट है कि कृषि शब्द का आशय मृदा पोशण कला तथा पशुपालन से है। ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोश के अनुसार कृषि मृदा पोषण कला एवं विज्ञान है जिससे सम्बन्धित क्रियायें यथा एकत्रीकरण, पशुपालन, जुताई तथा खेती सम्मिलित है। कृषि में केवल अनाज का उत्पादन ही नहीं होता है अपितु कृषि से सम्बन्धित अनेक पक्षों की क्षेत्रीय विविधता का भी अध्ययन किया जाता है। कृशि, फसलोंत्पादन से अधिक व्यापक है। यह मानव द्वारा पर्यावरण का रूपान्तरण है। जिससे फसलों एवं पशुओं के लिये अनुकूलतम दशायें सुनिश्चित की जा सकें तथा विवेकपूर्ण चयन से इनकी उपयोगिता में वृद्धि की जा सकें। इस प्रकार इसके अन्तर्गत कृषक, कृषि के विभिन्न तत्वों को विवेकपूर्ण ढंग से संगठित कर अनुकूलतम उपयोग करता है। आर्थिक दृष्टिकोण में कृषि एक उद्योग का रूप लेता जा रहा है। वर्तमान समय में यह एक उद्यम हैं जिसका मूल उद्देष्य लाभार्जन है। इस प्रकार कृषि एक क्रमबद्ध उद्यम है जिसमें समस्त क्रियायें उद्देश्ययुक्त होती है।

भारतवर्श की अधिसंख्य जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। यदि हम आर्थिक विकास की बात करते हैं तो निश्चित ही हमें ग्रामीण विकास पर अपना ध्यान केन्द्रित करना होगा। जब तक ग्रामीण क्षेत्रों का विकास नहीं होगा, तब तक भारतवर्श का समग्र विकास सम्भव नहीं है। यह तभी सम्भव है जब सरकार कृशि क्षेत्र के विकास पर ध्यान केन्द्रित करेगी। कृषि क्षेत्र के समग्र विकास के बिना देश के विकास की कल्पना करना ही व्यर्थ है। विकास की प्रक्रिया एक सतत् प्रक्रिया है। भारत में केन्द्र व राज्य सरकारों ने एक समान सतत् विकास प्रक्रिया को न अपनाकर भेद पूर्ण अर्थात् असंतुलित विकास प्रक्रिया को अपनाया है। इनकी नीतियों में क्षेत्रवाद, भाशावाद, जातिवाद, वोट बैंक की राजनीति की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। इस प्रकार विकास के क्षेत्र में विशमता अधिक दिखाई देती है। विकास प्रक्रिया में विभिन्न प्रकार के कारण अवरोध उत्पन्न करने के लिये जिम्मेदार होते हैं।

विकास प्रक्रिया के प्रत्येक क्षेत्र में वित्त की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। कृशि क्षेत्र के विकास एवं ग्रामीण क्षेत्र के सर्वांगीण विकास में वित्तीय संसाधनों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र में सरकारों ने भी गंभीरतापूर्वक

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

विचार करना शुरू किया है। ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय संसाधनों के प्रवाह को बढ़ाने की प्रक्रिया शुरू की है। आज ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग व्यवस्था को सुदृढ़ किया जा रहा है। कृषि क्रियाओं को सम्पन्न करने के लिये सुविधापूर्वक वित्त उपलब्ध कराने के प्रयास किये जा रहे हैं। इस प्रकार धन के अभाव में कृषि कार्यों में किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न न होने पाये इसके प्रयास किये जा रहे हें। विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में भी इस ओर विशेष ध्यान दिया गया है। वर्तमान समय में वार्शिक योजनाओं के साथ–साथ पंचवर्शीय योजनाओं में भी ग्रामीण विकास को फोकस किया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में इसके समर्थन में सरकारी एजेन्सियों के साथ बैंकिंग क्षेत्र को विस्तार प्रदान किया जा रहा है। इन प्रयासों के कारण ही देश के ग्रामीण विकास हेतु संस्थागत साख की मात्रा में भारी वृद्धि हुई है। लेकिन फिर भी सामान्य अवधारणा यह है कि संस्थागत साख में हुई वृद्धि, बढ़े हुये कृषि उत्पादन, उत्पादकता तथा ग्रामीण आय से सामंजस्य नहीं रखती है। यह कमी प्रमुख रूप से विकास के लिये आवश्यक प्रभावी क्षेत्रीय अथवा स्थानीय साख योजनाओं की अनुपस्थिति के कारण देखने को मिलती है। हमें संतुलित विकास की ओर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिये। संतुलित विकास का तर्क हमारे सभी अर्थशास्त्रियों की ओर से भी दिया गया है। संतुलित विकास के सर्मथक ग्रामीण विकास को एक दूसरे का पूरक मानते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में लघु एवं कुटीर उद्योगों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसके बिना ग्रामीण विकास को मूर्त्त रूप नहीं दिया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्र के विकास के लिये कृषि विकास के साथ–साथ कृषि आधारित लघु एवं कुटीर उद्योगों पर पर्याप्त ध्यान केन्द्रित करना होगा।

आज कृषि क्षेत्र के माध्यम से ग्रामीण विकास की कल्पना को साकार किया जा सकता है। कृषि को भी एक उद्योग का दर्जा प्रदान करके उद्योगों जैसी सुविधायें प्रदान करने की आवश्यकता है। कृषि क्षेत्र में नगदी फसलों (Cash Crops) को उगाने का प्रचलन बढ़ा है। इस प्रकार की फसलों को बेचकर कम समय में अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है। आज कृषि क्षेत्र में सिचिंत क्षेत्रफल में वृद्धि हुई है। इस क्षेत्र में निरन्तर प्रगति हो रही है। कृषि विकास एवं ग्रामीण विकास में सीधा सम्बन्ध है। इसलिये नीति निर्माताओं को कृषि क्षेत्र की प्रगति की ओर ध्यान देना होगा तभी ग्रामीण विकास की कल्पना साकार हो पायेगी। आज इस ओर बहुत ही तीव्र गति से प्रयास किये जा रहे हैं जिसके सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो रहे हैं।

ग्रामीण विकास में कृषि की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध हो रही है। आज ग्रामीण क्षेत्र में परिवहन के साधनों के विस्तार से भी इस क्षेत्र ने प्रगति की है। कृषि क्षेत्र के विकास में आवागमन के साधनों के साथ–साथ वित्तीय उपलब्धता की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। आज ग्रामीण क्षेत्र में कृषकों के जीवन–स्तर में भी महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिलते हैं। वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता के कारण जीवन–स्तर में महत्वपूर्ण बदलाव हुये हैं। आज कृषि क्षेत्र के विकास में संस्थागत वित्त की उपलब्धता ने ग्रामीण क्षेत्र के विकास की राह को सुगम बना दिया है। ग्रामीण विकास में वित्तीय संसाधनों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती जा रही है। आज हमारी वार्शिक योजनाओं के साथ–साथ पंचवर्शीय योजनाओं में भी ग्रामीण विकास को फोकस किया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में इसके समर्थन में सरकारी एजेन्सियों के साथ बैंकिंग क्षेत्र को विस्तार प्रदान किया जा रहा है। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप देश के ग्रामीण विकास हेतु संस्थागत साख की मात्रा में भारी वृद्धि हुई है। लेकिन फिर भी सामान्य अवधारणा यह है कि संस्थागत साख में वृद्धि बढ़े हुए कृषि उत्पादन, उत्पादकता तथा ग्रामीण आयसे सामंजस्य नहीं रखती है। यह कमी प्रमुख रूप से विकास के लिये आवश्यक प्रभावी क्षेत्रीय अथवा स्थानीय साख योजनाओं की अनुपस्थिति के कारण देखने को मिलती है। हमें संतुलित विकास की तरफ अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिये। संतुलित विकास का तर्क हमारे अधिकांश अर्थशास्त्रियों की ओर से भी दिया गया है। संतुलित विकास के समर्थक इसलिये इसे एक दूसरे का पूरक मानते हैं। ग्रामीण विकास के सन्दर्भ में कृषि क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका है इसे नकारा नहीं जा सकता है। लेकिन विभिन्न अध्ययनों से यह भी स्पष्ट हुआ है कि ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी की समस्या भी बहुत विकराल है। ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त बेरोजगारी को दूर करने के सार्थक प्रयास करने होंगे। इस कार्य में कृषि आधारित लघु एवं कुटीर उद्योगों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण हो सकती है। ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त बेरोजगारी को लघु एवं कुटीर उद्योगों की स्थापना करके दूर किया जा सकता है। ग्रामीण विकास को वर्तमान परिस्थितियों विभिन्न कारक प्रभावित करते हैं। इन कारकों में आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं जनसंख्या वृद्धि प्रमुख रूप से है। वैसे यह भी कहा जाता है कि ग्रामीण विकास में बढ़ती जनसंख्या एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। जनसंख्या श्रम पूर्ति का स्रोत है। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में निरन्तर घटती हुई जोत ओर संस्थागत स्रोतों से उपलब्ध वित्त की कमी ने विकास प्रक्रियाको काफी हद तक प्रभावित किया है।

इस शोध पत्र के माध्यम से मैं कह सकता हूँ कि ग्रामीण विकास में वित्तीय संसाधनों (पूँजी) की महत्वपूर्ण भूमिका है। अल्पविकसित देशों के आर्थिक विकास में पूँजी संचय की समस्या भी विकास केन्द्र बिन्दु है। विशेशकर पूँजी

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

की पर्याप्ता होने पर भी अर्थव्यवस्था में उपलब्ध साधनों एवं श्रम शक्ति का कुशलता पूर्वक प्रयोग करके विकास प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जा सकता है। ग्रामीण विकास के लिये आर्थिक और गैर आर्थिक दोनों ही तत्व आवश्यक है। प्रो. रेगनार का भी यह मत है कि "आर्थिक विकास का मानवीय मूल्यों, सामाजिक प्रवृत्तियों, राजनैतिक दशाओं तथा ऐतिहासिक घटनाओं से एक घनिष्ट सम्बन्ध रहा है।" U.NO. (संयुक्त राष्ट्र संघ) में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार – "एक उपयुक्त वातावरण की अनुपस्थिति में आर्थिक प्रगति असंभव है। आर्थिक विकास के लिये आवश्यक है कि लोगों में प्रगति की प्रबल इच्छा हो, वे उसके लिये हर सम्भव त्याग करने को तत्पर हों, वे अपने आपको नये विचारों के अनुकूल ढालने को जागरूक हो और उनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व वैधानिक संस्थायें इन इच्छाओं को कार्यक्रम में परिणित करने में सहायक हों।"

भारत की वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार हम कह सकते हैं कि ग्रामीण विकास में कृशि की महत्वपूर्ण भूमिका है। कृषि क्षेत्र के विकास के बिना ग्रामीण क्षेत्र का विकास सम्भव नहीं है। यह बात गाँवों या प्रकृति के प्रति लगाव की भावुकता से प्रेरित होकर नहीं, बल्कि यथार्थ परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में कही जाती रही है। इसे देश की वास्तविकतायें सहज ही ग्रामीण विकास को सरकार की प्राथमिकताओं में प्रथम पायदान पर रखती है। देश का भौगोलिक आकार एवं जनसंख्या दोनों दृश्टियों से ग्रामीण क्षेत्रों का अनुपात बहुत अधिक है। गरीबी और बेरोजगारी दूर करना ही विकास प्रक्रिया का मुख्य लक्ष्य है। ग्रामीण क्षेत्रों में समस्यायें भी अधिक हैं। कृषि क्षेत्र के समुचित विकास के द्वारा ही ग्रामीण विकास की संभावना प्रबल होती है।

आज ग्रामीण क्षेत्रों का सम्बन्धित विकास, केन्द्र एवं राज्य सरकारों के समक्ष प्रमुख कार्यों में से एक है। केन्द्र सरकार का राष्ट्रीय साझा न्यूनतम कार्यक्रम, देश के समग्र विकास में गाँवों के महत्व को दर्शाता है और उन ग्रामीण क्षेत्रों के विकास हेतु काम करने को प्रतिबद्ध है जो कि विगत में विभिन्न कारणों से शहरी क्षेत्रों से पिछड़ गये हैं। ग्रामीण क्षेत्रों का विकास सरकार की प्राथमिकताओं में से एक है। इस प्रकार कह सकते हैं कि ग्रामीण विकास में कृषि की भूमिका महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कृषि अर्थशास्त्र – पी.के. गुप्ता, वृंदा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
2. भारतीय अर्थव्यवस्था – मिश्र एवं पुरी, हिमालया प्रकाशन।
3. भारत की दशायें – अर्मत्यसेन
4. भारतीय कृषि (समस्यायें, विकास एवं संभावनायें – डा. बद्री विशाल त्रिपाठी, किताब महल एजेन्सीज, इलाहाबाद।
5. भारत की आर्थिक समस्यायें – मामोरिया एवं जैन।
6. कृषि भूगो – डा. जे.एन. पाण्डेय एवं डा. एस.आर. कमलेश।
7. दैनिक समाचार पत्र – अमर उजाला, दैनिक जागरण।
8. एकीकृत जिला आयोजना–योजना आयोग, भारत सरकार, हिन्दुस्तान।
9. योजना पत्रिका, कुरूक्षेत्र पत्रिका।

*****